बड़ा बदलाव

(रोमियों 6)

बदला हुआ जीवन अत्याधिक महत्व के बदलने वाले अनुभव से आरम्भ होता है ...।

आज अद्‌भुत बदलाव सम्भव हैं। पानी उस टरबाइन पर गिरकर पहिये में बदल जाता है जो पानी की शक्ति को विद्युत शक्ति में बदल देता है। इतने छोटे-छोटे अणु जिन्हें नंगी आंखों से देखना असम्भव है न्युक्लियर हथियारों में बदल जाते हैं जिनमें पूरे शहर को बर्बाद करने की सामर्थ होती है। कोई स्त्री अपने बाल रंगाने के लिए ब्युटी पार्लर, अपनी नाक सीधी करवाने के लिए डॉक्टर के पास, नये दांत लगवाने के लिए दांतों के डॉक्टर के पास और जवान दिखने के लिए भार घटाने जा सकती है-और यह कितना बड़ा बदलाव है!

परन्तु रोमियों 6 अध्याय सबसे अद्‌भुत बदलाव की बात करता है वह बड़ा बदलाव व्यक्ति में तब आता है जब वह मसीही बनता है। मसीही बनने से पहले वह परमेश्वर के अनुग्रह से बाहर होता है परन्तु मसीही के रूप में वह परमेश्वर का बालक है। उससे पहले वह आत्मिक आशिषों से वंचित था; उसके बाद उसे मसीह में सभी आत्मिक आशीष प्राप्त होती हैं। पहले वह अनन्तकाल तक दण्ड का दोषी था; बाद में वह अनन्त जीवन पाया हुआ है। इस बड़े बदलाव का सबसे अद्‌भुत पहलू यह है कि यह सब इस तथ्य के बावजूद होता है कि वह अपनी सहायता आप करने के योग्य नहीं था; उसे उद्धार परमेश्वर के दान के रूप में मिला है!

उस परिवर्तन के महत्व को समझने के लिए जो मसीही बनने पर आता है, हमें यह समझना आवश्यक है कि पापपूर्ण मनुष्य के लिए, स्वर्ग के योग्य होने हेतु बदलना आवश्यक है। एक बिगड़े हुए, पाप से भरे, शैतान की आज्ञा मानने वाले बालक को प्रेम करने वाले और धर्मी और परमेश्वर के आज्ञा मानने वाले बालक में बदलना आवश्यक है। तौभी परमेश्वर के अनुग्रह से यह बदलाव हो सकता है और होता भी है: जेलोतेसी शिमौन और मत्ती चुंगी लेने वाला समर्पित शिष्य बन सकते हैं। शाऊल जो सताने वाला था, वह पौलुस प्रचारक बन सकता है; यूहन्ना जो ''गर्जन का पुत्र'' था, प्रेम का प्रेरित बन सकता है। कुरिन्थी जिन में से कई ''... वेश्यागामी ... मूर्तिपूजक ... परस्त्रीगामी ... लुच्चे ... पुरुषगामी ... चोर ... लोभी ... पियक्कड़ ... गाली देने वाले ... अन्धेर करने वाले'' थे, वे ''धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे'' (1 कुरिन्थियों 6:9-11) और उन्हें ''परमेश्वर की कलीसिया'' और ''पवित्र लोग'' कहा जा सकता था (1 कुरिन्थियों 1:2)।

रोमियों 6 अध्याय इस बदलाव की तीन सच्चाइयां बताता है।

यह बदलाव क्या है?

रोमियों 6 खोलकर बताता है कि इसकी सीमा कहां तक है।

हम पाप में थे, परन्तु अब पाप के लिए मर गए हैं। पौलुस पूछता है, ''क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?'' फिर वह कहता है, ''कदापि नहीं, हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं?'' (रोमियों 6:1, 2)। आयत 11 भी कहती है कि हम अपने आप को ''पाप के लिए मरा'' हुआ समझें।

हम पाप के दास थे, परन्तु अब पाप से स्वतन्त्र हो गए हैं। पौलुस कहता है कि हमारा उद्धार होने पर ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा'' (रोमियों 6:6, 7)। हमें उद्धार दिया गया है ताकि ''हम आगे को पाप के दास्तव में न रहें।'' बाद में पौलुस रोमियों को बताता है कि वे ''किसी समय पाप के दास थे'' परन्तु फिर आगे कहता है कि उन्हें ''पाप से छुड़ाया गया'' था (रोमियों 6:17, 18; तुलना 6:20, 22)।

चाहे रोमियों 6 कहता है कि उद्धार पाने पर हमें ''स्वतन्त्र किया'' जाता है (तुलना यूहन्ना 8:32), पर यह यह नहीं कहता कि हमें बिल्कुल ही छूट मिल जाती है। बल्कि हम ''धर्म के दास'' (रोमियों 6:18) और ''परमेश्वर के दास'' (रोमियों 6:22) हो जाते हैं। वास्तव में पूर्ण स्वतन्त्रता जैसी कोई बात नहीं है। लोग स्वतन्त्रता और दासता के बीच की बात नहीं चुनते हैं। बल्कि वे यह चुनते हैं कि वे किस के दास बनेंगे। भोगी व्यक्ति जो केवल सुख के लिए जीता है और अपने आपको पूरी तरह से आज़ाद होने की कल्पना करता है वास्तव में अपने इस जनून का गुलाम है।

परन्तु कोई हैरान हो सकता है कि फिर मसीही होने का क्या लाभ है? यदि दास ही बने रहना है तो मसीही क्यों बनें? पौलुस इस प्रश्न को पहले से भांप लेता है और इसका उत्तर देता है:

> जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतन्त्र थे। सो जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उनसे उस समय तुम क्या फल पाते थे? क्योंकि उनका अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतन्त्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है (रोमियों 6:20–23; तुलना 6:16)।

मसीह के पीछे चलना चुनकर व्यक्ति हर प्रकार की रुकावटों या अधिकार से पूर्ण रूप से स्वतन्त्र होना नहीं चुनता बल्कि वह परमेश्वर का गुलाम होना चुनता है। ऐसी पसन्द क्यों की जाती है? इनाम के कारण! धार्मिकता के गुलाम होने के कारण व्यक्ति को अनन्त जीवन मिलता है। यदि वह पाप का गुलाम रहे तो उसे मृत्यु के अलावा कुछ और नहीं मिलता! आप किसके गुलाम होना चुनेंगे?

सौ से अधिक साल पहले अब्राहम लिंकन ने गुलामों की आज़ादी की यानी दासता से मुक्ति की घोषणा को जारी किया। लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व यीशु ने आत्मिक दासता से मुक्ति की घोषणा जारी की, जिसमें सब लोगों के लिए पाप से स्वतन्त्रता का अवसर दिया गया!

हम पुराने गुलाम थे, परन्तु अब एक नया जीवन जीते हैं। पौलुस ने यह कहने के बाद कि हमारा उद्धार हुआ है ताकि हम ''नए जीवन की सी चाल'' चल सकें (रोमियों 6:4), ध्यान

दिलाया कि ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया'' (रोमियों 6:6)।

यह बदलाव कैसे होता है?

रोमियों 6 में हमें वह *ढंग* पता चलता है जिससे यह प्राप्त होता है।

हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है: ''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है'' (रोमियों 6:23)। उद्धार एक दान है इसलिए उद्धार अनुग्रह से होता है। (रोमियों 3:24 भी देखें।)

हमारा उद्धार अनुग्रह से मसीह के द्वारा होता है: परमेश्वर हमें ''हमारे प्रभु यीशु मसीह में'' अनन्त जीवन देता है (रोमियों 6:23)। पौलुस कहता है, ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे।'' ध्यान दें कि परमेश्वर ने इस बात की प्रतीक्षा नहीं की कि हम उद्धार पाने के योग्य हो जाएं बल्कि ''जब हम पापी ही थे तभी'' उस ने मसीह को हमारे लिए मरने हेतु दे दिया।

इस कारण हमारा उद्धार यीशु मसीह में और उसके द्वारा प्राप्त होता है। रोमियों 6:11 कहता है, ''ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो।'' इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह के बाहर उद्धार नहीं है।

हमारा उद्धार विश्वास से स्वीकार किया जाता है: ''सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें'' (रोमियों 5:1)। इफिसियों 2:8 में हम पढ़ते हैं: ''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।''

परन्तु रोमियों 6 यह भी स्पष्ट कर देता है कि हमारा उद्धार विश्वास से आज्ञा मानने के द्वारा होता है। रोमियों 6:17, 18 पर ध्यान दें:

> परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।

ये आयतें सिखाती हैं कि उद्धार आज्ञा मानने के बाद मिलता है। पौलुस कहता है कि ''तुम पाप के दास थे,'' परन्तु ''तुम मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए'' और ''पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।'' इसका क्रम इस प्रकार है: पहले, पाप के दास; दूसरा, उपदेश के मानने वाले; तीसरा, पाप से छुड़ाए गए; चौथा धर्म के दास। रोमी लोगों का उद्धार विश्वास से हुआ था, परन्तु उनका उद्धार तब तक नहीं हुआ जब तक उन्होंने आज्ञा नहीं मानी थी; यानी उनका उद्धार ''विश्वास को मानने'' (रोमियों 1:5; 16:26) से यानी उस ''विश्वास जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है'' से हुआ था (गलातियों 5:6)।

उन्होंने क्या आज्ञा मानी? रोमियों 6:17 कहता है कि उन्होंने ''उपदेश के सांचे'' (''form of doctrine''; KJV) को माना था जो उन्हें दिया गया था। इसका क्या अर्थ है? रोमियों 6:3–5 इसका उत्तर देता है:

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।

सुसमाचार, मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने को ही दिखाता है। पौलुस ने लिखा:

> हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैं ने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया (1 कुरिन्थियों 15:1-5)।

नया नियम भी हमें बताता है कि सुसमाचार की आज्ञा मानना आवश्यक है (2 थिस्सलुनीकियों 1:8, 9; 1 पतरस 4:17, 18; रोमियों 10:16)।

कोई उस सुसमाचार की आज्ञा कैसे मान सकता है जो मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने को दर्शाता है? इसका उत्तर है: बपतिस्मा लेकर! हमारा बपतिस्मा मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का चित्रण है। बल्कि यह उससे भी बढ़कर है। यानी बपतिस्मा लेने पर हम मसीह के साथ सहभागी होते हैं और उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में उसके साथ एक होते हैं। बपतिस्मा लेने पर हमें मसीह की मृत्यु का बपतिस्मा दिया जाता है यानी हमें मसीह के साथ दफ़ना दिया जाता है; और हम मसीह के साथ जी उठते हैं। इस प्रकार बपतिस्मा लेने पर हम सुसमाचार की आज्ञा को मान रहे होते हैं और तभी-इस से पहले नहीं-हमारा उद्धार होता है। उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा आवश्यक है। ''उपदेश का वह सांचा'' जिसे रोमियों ने माना था उसमें बपतिस्मा शामिल है।

बेशक अकेला बपतिस्मा उद्धार नहीं करता। बपतिस्मा विश्वास से ही होता है और बिना विश्वास के इसका कोई मतलब नहीं (कुलुस्सियों 2:12)। बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराना आवश्यक है और बिना मन फिराए बपतिस्मा लेने का कोई मतलब नहीं है (प्रेरितों 2:38; 17:30)। बिना विश्वास किए और मन फिराए बपतिस्मा लेने से उद्धार नहीं होगा। परन्तु यदि हम सुसमाचार के आज्ञापालन के लिए बपतिस्मा लेने को तैयार नहीं हैं तो विश्वास करना और मन फिराना अकेले किसी काम के नहीं।

इस बदलाव के क्या परिणाम हैं?

रोमियों 6 इसके *परिणाम बताता है*।

बदलाव का परिणाम नया जीवन होता है। पौलुस कहता है कि हम ''नये जीवन की चाल'' चलते हैं (रोमियों 6:4) और ''पाप के लिए तो मरे हुए परन्तु परमेश्वर के लिए जीवित'' होते

हैं (रोमियों 6:11)। तात्पर्य यह है कि मसीही बनने पर परमेश्वर के परिवार में परमेश्वर के बालकों के रूप में हमारा नया जन्म होता है।

बड़ा बदलाव जो होता है–या होना चाहिए वह बदला हुआ जीवन है। परन्तु मसीही व्यक्ति का जीवन बदला हुआ है या नहीं यह उसी के ऊपर निर्भर है।

इस अध्याय में पौलुस उसकी बात पर विचार करने के बाद उसके सुनने वालों के द्वारा दिए जा सकने वाले दो तर्कों को काट देता है।

एक तर्क जिसका उसने अनुमान लगाया वह यह है: "यदि हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है, और यदि अनुग्रह बहुतायत से वहां होता है, जहां बहुत पाप हो जैसा कि तुम कहते हो [रोमियों 5:20], तो हमें और पाप करना चाहिए ताकि अनुग्रह बहुत" (रोमियों 6:1) हो। यह कहने का उनका उद्देश्य यह होगा कि वास्तव में अधिक पाप करने का प्रस्ताव रखना नहीं बल्कि यह दिखाना है कि पौलुस का इस बात का ज़ोर कि हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है, न कि व्यवस्था से, गलत होना चाहिए।

पौलुस उनके तर्क का उत्तर यह कहते हुए देता है जिसका अर्थ है: "नहीं, क्योंकि यह उचित नहीं है कि हम जो पाप से छुड़ाए गए हैं पाप करते रहें।" "हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं?" (रोमियों 6:2)।

दूसरा तर्क जिसका उत्तर पौलुस यह कहकर देता है वह यह है: "यदि हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं जैसा तुम कहते हो [रोमियों 6:14] तो हम पाप से बचने की किसी जिम्मेदारी से छूट गए हैं।" "तो क्या हुआ? क्या हम इसलिए पाप करें, कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन अनुग्रह के अधीन हैं? कदापि नहीं।" (रोमियों 6:15)। पौलुस उत्तर देता है, "नहीं, क्योंकि स्वतन्त्रता में जिम्मेदारी शामिल है। और यदि हम पाप की सेवा करते रहें तो हम स्वतन्त्र नहीं बल्कि पाप के दास ही हैं।"

इस प्रकार अध्याय का मुख्य व्यावहारिक ज़ोर यह है कि मसीही व्यक्ति का जीवन बदला हुआ हो। पौलुस कई विश्वास दिलाने वाले कारण देता है कि मसीही व्यक्ति को पाप क्यों नहीं करना चाहिए बल्कि बदला हुआ जीवन बिताना चाहिए: (1) मसीही व्यक्ति को पाप नहीं करना चाहिए क्योंकि उसे पाप से छुड़ाया गया है (रोमियों 6:2, 9–11)। हम दोष से, मांगों से और पाप की सामर्थ से छुड़ाए गए हैं। निश्चय ही हमें पाप में रहकर दासता में वापस नहीं जाना चाहिए। (2) मसीही व्यक्ति को पाप नहीं करना चाहिए क्योंकि वह नया जीवन जी रहा है (रोमियों 6:4)। बदलाव हो चुका है यानी उसका नया जन्म हो चुका है। नये जीवन के लिए नये मानक होने आवश्यक हैं। (3) मसीही व्यक्ति को पाप नहीं करना चाहिए क्योंकि अब वह परमेश्वर का सेवक अर्थात परमेश्वर का गुलाम है (रोमियों 6:18)। इसलिए वह परमेश्वर की सेवा करने और आज्ञा मानने का जिम्मेदार है। (4) मसीही को पाप नहीं करना चाहिए क्योंकि यदि वह पाप करता है तो वह उसे नाश कर देगा (रोमियों 6:21–23)।

सारांश

तो फिर बदले हुए व्यक्ति को कैसे जीवन बिताना चाहिए? दो आवश्यक बातें इसे संक्षिप्त कर देती हैं:

पहला, ''इसलिए पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज न करे, कि तुम उस की लालसाओं के आधीन रहो'' (रोमियों 6:12; तुलना 6:13)। मसीही व्यक्ति के पास यह कहने की सामर्थ है कि उसके जीवन पर कौन या क्या नियन्त्रण रखेगा। उसकी जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है कि वह पाप से संचालित न हो। अपने आपसे गम्भीरतापूर्वक, सावधनीपूर्वक, विवेकपूर्वक पूछें: ''मेरे शरीर पर कौन-या क्या-शासन करता है? क्या प्रभु मुझे चलाता है? या पाप मेरे ऊपर शासन करके मेरे कार्यों को संचालित करता है?''

दूसरा, ''और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हाथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंपो'' (रोमियों 6:13, 6:19 भी देखें)। नकारात्मक रूप से हमें पाप के गीत की आवाज़ का विरोध करना चाहिए। परन्तु इतना ही काफ़ी नहीं है। एक सकारात्मक दृष्टिकोण से हमें अपने आप को पूरी रीति से प्रभु को दे देना आवश्यक है। ''मेरी ज़िन्दगी को ले, उस पर मोहर तू कर दे'' गीत में इसे बताया गया है:

मेरी ज़िन्दगी को ले,
उस पर मुहर कर तू दे;
कर कबूल इन हाथों को
कि मैं करूं हम्द दिन रात।

मर्ज़ी भी मैं देता हूं,
तेरे ताबे होता हूं।
ले तू मेरा दिन मिस्कीन,
उसमें हो तू तख़्त-निशीन।

अपने दिल का सारा प्यार,
तुझ पर करता हूं निसार;
मेरा सब कुछ है तेरा
तेरा ही रहूं सदा।

बड़ा बदलाव, यदि बदले हुए जीवन में मिलता है तो अन्त में इसका परिणाम अनन्त जीवन होगा। रोमियों 6:23 कहता है, ''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' अनन्त जीवन एक वरदान है; यह अनुग्रह से मिलता है, परन्तु यदि कोई मसीही अपना जीवन बदलने से इनकार करे और संसार में वापस चला जाए तो उसका परिणाम केवल मृत्यु है। (देखें 2 पतरस 2:20.)

क्या आप ''अपने पुराने मनुष्यत्व'' से तंग आ चुके हैं? शायद आप ने अपने आप में सुधार की कोशिश की है। क्या आपने अपने आपको सुधारने वाली किताबें पढ़ी हैं: बेहतर जीवन शैली, अच्छी स्वस्थ खुराक या व्यायाम? यहां तक कि शायद शारीरिक परिवर्तन?

''पेट घटाने,'' ''नाक की सर्जरी'' या ''फेसलिफ्ट'' के बजाय आप को आवश्यकता बदलने की है; ''अपने पुराने जीवन'' से निकलकर मसीह में ''नया मनुष्य'' बन जाएं! यीशु में

विश्वास लाएं, अपने पापों से मन फिराएं और पापों की क्षमा के लिए मसीह में बपतिस्मा लें! आप एक नया व्यक्ति अर्थात मरे हुए के बजाय जीवित, पाप के दास के बजाय धर्म का दास, अर्थात नया जन्म पाया हुआ, परमेश्वर के परिवार में एक नया बालक बन जाएंगे। फिर आप वह बदला हुआ जीवन जी रहे हैं जो आपका प्रभु आपसे चाहता है, और आपका प्रतिफल अनन्त जीवन अर्थात परमेश्वर के साथ सदा के लिए स्वर्ग में वास होगा!